NEXT IAS

AANKALAN-II : 2026

GENERAL STUDIES-II

Answer Key

1. (c)	21. (b)	41. (a)	61. (a)	81. (a)
2. (d)	22. (d)	42. (b)	62. (b)	82. (b)
3. (a)	23. (c)	43. (c)	63. (c)	83. (c)
4. (d)	24. (a)	44. (d)	64. (c)	84. (d)
5. (c)	25. (b)	45. (d)	65. (a)	85. (a)
6. (c)	26. (d)	46. (a)	66. (b)	86. (a)
7. (b)	27. (c)	47. (b)	67. (c)	87. (b)
8. (b)	28. (a)	48. (c)	68. (d)	88. (b)
9. (d)	29. (d)	49. (d)	69. (a)	89. (c)
10. (a)	30. (a)	50. (a)	70. (b)	90. (d)
11. (c)	31. (c)	51. (b)	71. (c)	91. (c)
12. (d)	32. (b)	52. (c)	72. (d)	92. (d)
13. (b)	33. (c)	53. (d)	73. (a)	93. (a)
14. (a)	34. (a)	54. (a)	74. (b)	94. (b)
15. (d)	35. (d)	55. (b)	75. (c)	95. (d)
16. (c)	36. (a)	56. (c)	76. (b)	96. (a)
17. (b)	37. (c)	57. (a)	77. (c)	97. (b)
18. (d)	38. (b)	58. (d)	78. (d)	98. (b)
19. (c)	39. (d)	59. (c)	79. (a)	99. (d)
20. (a)	40. (a)	60. (d)	80. (b)	100.(b)

NEXT IAS हिन्दी

DELHI CENTRE:
Vivekananda House
6-B, Pusa Road,
Near Karolbagh Metro
Pillar No. 111,
Old Rajinder Nagar,
New Delhi - 110060
Phone: 8081300200

DELHI CENTRE:
Tagore House
27-B, Pusa Road,
Near Karolbagh Metro
Pillar No. 118,
Old Rajinder Nagar,
New Delhi - 110060
Phone: 8081300200

DELHI CENTRE:
Tilak House
42-B, Radio Colony,
Ramlal Kapoor Marg,
Near Parmanand Marg,
Mukherjee Nagar Centre,
North Delhi - 110009
Phone: 9311667076

JAIPUR CENTRE:
6/7, 3rd Floor,
Shri Gopal Nagar,
Near Gopalpura Bypass,
Riddhi Siddhi Circle,
Jaipur - 302015
Phone: 93582-00522

PRAYAGRAJ CENTRE:
13A/1B, KP Complex,
Tashkent Marg,
Near Civil Lines,
Prayagraj - 211001
Uttar Pradesh
Phone: 99588-57757

1. (c)

कन्नौजी पश्चिमी हिन्दी की एक बोली है और उसका मुख्य क्षेत्र कन्नौज, फर्रुखाबाद, इटावा, हरदोई, शाहजहाँपुर तथा कानपुर का कुछ भाग है। यह ब्रजभाषा से बहुत मिलती-जुलती है, यहाँ तक कि कुछ विद्वान उसे ब्रजभाषा का ही एक उपरूप मानते हैं; किन्तु ग्रियर्सन ने उसे अलग बोली के रूप में स्वीकार किया है। विकल्प (a) का सहारनपुर-मुजफ्फरनगर क्षेत्र खड़ीबोली का है, जो पश्चिमी हिन्दी की ही बोली है और जिससे आधुनिक मानक हिन्दी विकसित हुई। विकल्प (b) का झाँसी-जालौन क्षेत्र बुन्देली का है, जो बुन्देलखण्ड में बोली जाती है। विकल्प (d) का गोरखपुर-देवरिया क्षेत्र भोजपुरी का है, जो बिहारी वर्ग की बोली है, पश्चिमी हिन्दी की नहीं। अतः विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

2. (d)

अवधी का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। अर्धमागधी से पूर्वी हिन्दी की तीनों बोलियाँ - अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी - निकली हैं। शौरसेनी अपभ्रंश (विकल्प a) से पश्चिमी हिन्दी की बोलियाँ तथा राजस्थानी और गुजराती विकसित हुईं; इसीलिए ब्रजभाषा का उद्गम शौरसेनी माना जाता है। मागधी अपभ्रंश (विकल्प b) से बिहारी वर्ग की बोलियाँ - भोजपुरी, मगही तथा मैथिली - एवं बांग्ला, ओड़िया और असमिया निकलीं। महाराष्ट्री अपभ्रंश (विकल्प c) से मराठी का विकास हुआ। अवधी का साहित्यिक महत्त्व अत्यधिक है, क्योंकि तुलसीदास का 'रामचरितमानस' तथा जायसी का 'पद्मावत' इसी बोली में रचे गए। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

3. (a)

सूरदास की रचनाएँ मुख्यतः ब्रजभाषा में हैं। 'सूरसागर', 'सूरसारावली' तथा 'साहित्य-लहरी' ब्रजभाषा के सर्वोत्तम उदाहरण माने जाते हैं, और भक्तिकाल में कृष्णभक्ति शाखा की समस्त प्रमुख रचनाएँ इसी बोली में हुईं। अवधी (विकल्प b) में तुलसीदास तथा जायसी ने लिखा, अर्थात् रामभक्ति शाखा और सूफी प्रेमाख्यान काव्य की भाषा अवधी रही। खड़ीबोली (विकल्प c) का साहित्यिक प्रयोग मुख्यतः आधुनिक काल में, भारतेन्दु युग के बाद, प्रतिष्ठित हुआ। मैथिली (विकल्प d) में विद्यापति की पदावली प्रसिद्ध है, किन्तु वह बिहारी वर्ग की बोली है। अतः विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

4. (d)

'य' ऊष्म नहीं, अन्तःस्थ व्यंजन है। हिन्दी में अन्तःस्थ व्यंजन चार हैं - य, र, ल, व; इन्हें अन्तःस्थ इसलिए कहा जाता है कि इनका उच्चारण स्वर और व्यंजन के बीच की स्थिति में होता है। ऊष्म व्यंजन भी चार हैं - श, ष, स, ह; इनके उच्चारण में मुख से वायु रगड़ खाती हुई निकलती है, जिससे ऊष्मा उत्पन्न होती है, इसीलिए इन्हें ऊष्म या संघर्षी कहा जाता है। विकल्प (a), (b) और (c) तीनों ऊष्म वर्ग के ही हैं। ध्यान रहे कि श, ष, स महाप्राण एवं अघोष हैं, जबकि 'ह' महाप्राण होते हुए भी घोष है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

5. (c)

'मनोरथ' में विसर्ग सन्धि है और उसका विच्छेद मनः + रथ होता है। नियम यह है कि यदि विसर्ग से पूर्व 'अ' हो और उसके बाद कोई घोष व्यंजन या स्वर आए, तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है; यहाँ 'मनः' के बाद 'र' (घोष) आने से विसर्ग 'ओ' में बदल गया और 'मनोरथ' बना। इसी नियम से मनः + बल = मनोबल तथा तपः + वन = तपोवन बनते हैं। विकल्प (a) सन्धि के बाद के रूप को ही विच्छेद मान लेता है, जो त्रुटिपूर्ण है। विकल्प (b) विसर्ग का लोप कर देता है, जिससे सन्धि की पहचान ही समाप्त हो जाती है। विकल्प (d) 'ओरथ' नाम का कोई सार्थक शब्द हिन्दी या संस्कृत में नहीं होता है। यदि विसर्ग के बाद 'ओ' स्वर आता, तो सन्धि का यह नियम लागू ही नहीं होता। सन्धि-विच्छेद में दोनों पक्षों के शब्दों का सार्थक होना अनिवार्य है, जबकि यहाँ मूल शब्द केवल 'रथ' है।
अतः विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

6. (c)

श्रीकृष्ण के अर्थ में 'पीताम्बर' बहुव्रीहि समास है, क्योंकि उसका विग्रह है 'पीत है अम्बर (वस्त्र) जिसका, अर्थात् श्रीकृष्ण'। बहुव्रीहि की पहचान यही है कि समस्त पद का अर्थ उसके किसी भी पद में न होकर किसी तीसरे पदार्थ की ओर संकेत करता है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि यदि 'पीताम्बर' का अर्थ केवल 'पीला वस्त्र' लिया जाए, तो वही शब्द कर्मधारय समास (विकल्प a) हो जाएगा; अर्थ बदलने से समास भी बदल जाता है, और प्रश्न में कोष्ठक इसीलिए दिया गया है। द्विगु (विकल्प b) में पहला पद संख्यावाचक होता है, जैसे त्रिभुज या नवरत्न, जो यहाँ नहीं है। अव्ययीभाव (विकल्प d) में पहला पद अव्यय होता है और समस्त पद क्रियाविशेषण की भाँति

प्रयुक्त होता है, जैसे यथाशक्ति। अतः विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

7. (b)

'मृत्तिका' संस्कृत का तत्सम शब्द है और उसका तद्भव रूप 'मिट्टी' है। तत्सम वे शब्द हैं जो संस्कृत से ज्यों के त्यों हिन्दी में आ गए, जबकि तद्भव वे हैं जो प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए रूप बदलकर आए। मृत्तिका से मिट्टी तक का विकास क्रम मृत्तिका - मट्टिआ - मिट्टी रहा है। विकल्प (a) 'मृदा' स्वयं एक तत्सम शब्द है, तद्भव नहीं। विकल्प (c) 'मृत्तिक' केवल मूल शब्द का एक अन्य संस्कृत रूप है। विकल्प (d) 'माटीपन' कोई मान्य शब्द नहीं है। इसी प्रकार के अन्य उदाहरण हैं - काष्ठ से काठ, उष्ट्र से ऊँट, मयूर से मोर तथा घोटक से घोड़ा। अतः विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

8. (b)

'अलमारी' पुर्तगाली शब्द 'armário' से हिन्दी में आया है। पुर्तगालियों के भारत आगमन के बाद अनेक शब्द हिन्दी में प्रविष्ट हुए, जिनमें अलमारी के अतिरिक्त चाबी, तौलिया, बाल्टी, साबुन, गोदाम, कमीज, नीलाम, आलपीन, अनानास तथा पादरी प्रमुख हैं। विकल्प (a) 'कैंची' तुर्की से आया है, और तुर्की मूल के अन्य शब्द हैं चाकू, तोप, बारूद, बहादुर तथा बेगम। विकल्प (c) 'किताब' अरबी से आया है, जिसके साथ कानून, अदालत, कीमत, तारीख तथा वकील भी अरबी मूल के हैं। विकल्प (d) 'आवाज़' फारसी से आया है, जैसे आराम, दीवार, चश्मा, बीमार तथा जिंदगी भी फारसी के हैं। अतः विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

9. (d)

'निर्वाह' का निर्माण निर् + वाह से हुआ है, अतः उपसर्ग 'निर्' है। 'निर्' संस्कृत का उपसर्ग है, जिसका अर्थ बाहर, रहित अथवा पूर्णता होता है; इसी से निर्जल, निर्मल, निर्दोष तथा निर्वासन जैसे शब्द बने हैं। विकल्प (a) 'नि' भी एक स्वतन्त्र उपसर्ग है, जिससे निबन्ध, नियम और निवास बनते हैं, किन्तु उससे 'निर्वाह' नहीं बन सकता, क्योंकि तब 'र्' का कोई स्रोत नहीं रहेगा। विकल्प (c) ''नी' हिन्दी में उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त नहीं होता; संस्कृत/हिन्दी में 'नि' या 'निर्' ही मानक उपसर्ग हैं। विकल्प (b) 'नीर' तो उपसर्ग है ही नहीं, वह 'जल' अर्थ वाली संज्ञा है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

10. (a)

'लिखावट' में मूल धातु 'लिख' के साथ 'आवट' प्रत्यय जुड़ा है। 'आवट' कृत् प्रत्यय है, जो धातु से भाववाचक संज्ञा बनाता है; इसी से सजावट, बनावट, रुकावट, थकावट, मिलावट तथा दिखावट जैसे शब्द बने हैं। प्रत्यय की पहचान करते समय यह देखना चाहिए कि मूल शब्द के बाद कितना अंश शेष बचता है - यहाँ 'लिख' हटाने पर 'आवट' बचता है, 'वट' या 'अट' नहीं। विकल्प (b) 'वट' मानने पर मूल शब्द 'लिखा' होगा, जो धातु नहीं है। विकल्प (c) और (d) और भी छोटे अंश लेते हैं, जिनसे शेष बचा भाग कोई सार्थक मूल शब्द नहीं बनाता। अतः विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

11. (c)

प्रत्येक युग्म की पहचान उसके विशिष्ट पर्यायवाचियों से होती है। अश्व के पर्यायवाची तुरंग, हय, घोटक, बाजि तथा सैन्धव हैं, अतः A-3। हाथी के पर्यायवाची गज, कुंजर, हस्ती, द्विप, नाग तथा मतंग हैं, अतः B-4। सूर्य के पर्यायवाची भानु, दिवाकर, आदित्य, रवि, मार्तण्ड तथा प्रभाकर हैं, अतः C-2। चन्द्रमा के पर्यायवाची राकेश, विधु, शशि, सुधांशु, मयंक तथा निशाकर हैं, अतः D-1। यहाँ सावधानी का बिन्दु यह है कि 'विधु' को कभी-कभी विष्णु के अर्थ में भी देखा जाता है, किन्तु हिन्दी में उसका प्रचलित अर्थ चन्द्रमा ही है। सही मेल A-3, B-4, C-2, D-1 है। अतः विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

12. (d)

'कृपण' और 'कंजूस' परस्पर पर्यायवाची हैं, विलोम नहीं। दोनों का अर्थ एक ही है, अर्थात् धन खर्च करने में अत्यन्त संकोच करने वाला; 'कृपण' का वास्तविक विलोम 'उदार' अथवा 'दानी' होगा। विकल्प (a) सही है, क्योंकि ऋजु का अर्थ सीधा और वक्र का अर्थ टेढ़ा है। विकल्प (b) भी सही है, क्योंकि आदान का अर्थ लेना और प्रदान का अर्थ देना है। विकल्प (c) भी सही है, क्योंकि अथ का अर्थ आरम्भ और इति का अर्थ समाप्ति है; ग्रन्थों में 'अथ' आरम्भ में और 'इति' अन्त में लिखने की परम्परा इसी से जुड़ी है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

13. (b)

चारों शब्द अनेकार्थी हैं, अर्थात् एक ही शब्द के एक से अधिक स्वतन्त्र अर्थ हैं। 'अर्क' के अर्थ सूर्य, मदार का पौधा तथा किसी वस्तु का सार या रस हैं, अतः A-3। 'हरि' के अर्थ विष्णु, सिंह, सर्प, इन्द्र, बन्दर तथा घोड़ा हैं, अतः

B-1। 'कनक' के अर्थ सोना, धतूरा तथा गेहूँ हैं, अतः C-4; यहाँ ध्यान देने योग्य है कि कनक का धतूरा अर्थ कम प्रचलित होने के कारण प्रायः जाल बनता है। 'अम्बर' के अर्थ आकाश तथा वस्त्र हैं, अतः D-2; इसी दूसरे अर्थ के कारण 'पीताम्बर' शब्द बनता है। सही मेल A-3, B-1, C-4, D-2 है। अतः विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

14. (a)

'अवलम्ब' का अर्थ सहारा या आश्रय है, जबकि 'अविलम्ब' का अर्थ बिना देर किए, अर्थात् शीघ्र है। दोनों शब्दों में केवल एक मात्रा का अन्तर है, किन्तु अर्थ पूर्णतः भिन्न हो जाता है। 'अविलम्ब' का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि वह अ + विलम्ब है, अर्थात् विलम्ब का अभाव; इसीलिए उसका अर्थ 'देर' नहीं, बल्कि देर का न होना है। अतः विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

15. (d)

'अन्तर्ध्यान' अशुद्ध है; शुद्ध रूप 'अन्तर्धान' है। यह अन्तः + धान से बना है, जिसका अर्थ है भीतर रख लिया जाना, अर्थात् ओझल हो जाना; इसका 'ध्यान' शब्द से कोई सम्बन्ध नहीं है, और ध्वनि-साम्य के कारण ही यह भूल व्यापक रूप से होती है। विकल्प (a) 'ज्योत्स्ना' शुद्ध है, जिसका अर्थ चाँदनी है; इसे प्रायः 'ज्योत्सना' लिख दिया जाता है, जो अशुद्ध होता। विकल्प (b) 'सौन्दर्य' शुद्ध है; 'सौंदर्य' भी मान्य है, किन्तु 'सुन्दर्य' अशुद्ध होगा। विकल्प (c) 'प्रतिद्वन्द्वी' शुद्ध है, जिसमें दो बार 'द्व' आता है; इसे 'प्रतिद्वंदी' लिखना सामान्य भूल है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

16. (c)

विकल्प (c) ही पूर्णतः शुद्ध वाक्य है। विकल्प (a) में पुनरुक्ति दोष है, क्योंकि 'कृपया' और 'कृपा करें' दोनों एक ही भाव देते हैं; शुद्ध रूप होगा 'आप यहाँ पधारने की कृपा करें।' विकल्प (b) में लिंग-सम्बन्धी अशुद्धि है, क्योंकि 'सिर' पुल्लिंग है, अतः उसके साथ 'अपनी' नहीं, 'अपने' आएगा; शुद्ध रूप होगा 'उसने अपने सिर पर हाथ रखा।' विकल्प (d) में भी पुनरुक्ति दोष है, क्योंकि 'केवल' और 'मात्र' दोनों सीमा-बोधक हैं और एक साथ प्रयुक्त नहीं होने चाहिए; शुद्ध रूप होगा 'यहाँ केवल दो व्यक्ति उपस्थित थे।' अतः विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

17. (b)

यहाँ अपादान कारक है, क्योंकि 'से' अलगाव अथवा पृथक्ता के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अपादान कारक का चिह्न 'से' है और वह वहाँ आता है जहाँ किसी वस्तु का किसी से अलग होना सूचित होता है; यहाँ बालक विद्यालय से अलग होकर घर की ओर चला, अतः अपादान है। सावधानी का बिन्दु यह है कि करण कारक (विकल्प a) का चिह्न भी 'से' ही होता है, किन्तु वहाँ वह साधन के अर्थ में आता है, जैसे 'वह कलम से लिखता है।' सम्प्रदान कारक (विकल्प c) के चिह्न 'को' तथा 'के लिए' हैं और वह देने या किसी के निमित्त करने के भाव में आता है। अधिकरण कारक (विकल्प d) के चिह्न 'में' तथा 'पर' हैं और वह आधार सूचित करता है। अतः विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

18. (d)

'लिखवाता है' प्रेरणार्थक क्रिया है, क्योंकि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य से कराता है। प्रेरणार्थक क्रिया के दो रूप होते हैं - प्रथम प्रेरणार्थक, जिसमें मूल धातु में 'आ' जुड़ता है, जैसे लिखना से लिखाना; और द्वितीय प्रेरणार्थक, जिसमें 'वा' जुड़ता है, जैसे लिखना से लिखवाना। यहाँ 'लिखवाना' द्वितीय प्रेरणार्थक रूप है, जिसमें कर्ता किसी तीसरे के माध्यम से कार्य कराता है। अकर्मक क्रिया (विकल्प a) वह है जिसका कोई कर्म न हो, जैसे 'वह सोता है', जबकि यहाँ 'पत्र' स्पष्ट कर्म है। पूर्वकालिक क्रिया (विकल्प b) मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न होती है और प्रायः 'कर' लगाकर बनती है, जैसे 'पढ़कर'। नामधातु क्रिया (विकल्प c) संज्ञा या विशेषण से बनती है, जैसे 'शर्माना' अथवा 'अपनाना'। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

19. (c)

'सेना' समूहवाचक संज्ञा है, क्योंकि वह अनेक व्यक्तियों के समूह का एक साथ बोध कराती है। समूहवाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण हैं सभा, भीड़, कक्षा, दल, झुंड, मण्डल तथा परिवार; इनमें इकाई एक होती है, किन्तु उसके भीतर अनेक सदस्य होते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा (विकल्प a) किसी एक विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का नाम होती है, जैसे गंगा, लखनऊ अथवा रामचरितमानस। जो संज्ञा शब्द किसी द्रव्य, पदार्थ या धातु का बोध कराते है उसे द्रव्यवाचक संज्ञा (विकल्प b) कहते हैं। अथार्त जो शब्द किसी पदार्थ, धातु और द्रव्य को दर्शाते हैं वहाँ पर

द्रव्यवाचक संज्ञा होती है। दूसरे शब्दों में जिस संज्ञा से मापने या तौलनेवाली वस्तु का बोध हो उसे द्रव्यवाचक कहते हैं। जैसे- सोना, चाँदी, हीरा, मोती, दूध, दही, तेल, घी, कोयला, पानी, लकड़ी, कपड़ा, लोहा, चूना, पत्थर, सीमेंट आदि। भाववाचक संज्ञा (विकल्प d) गुण, दशा या भाव का बोध कराती है, जैसे वीरता, मिठास अथवा बुढ़ापा। अतः विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

20. (a)

इस लोकोक्ति का अर्थ है कि जिसे काम नहीं आता, वह अपनी अयोग्यता स्वीकार करने के स्थान पर परिस्थितियों अथवा साधनों में दोष ढूँढ़ने लगता है। नाचना न आने पर आँगन को टेढ़ा बताना इसी प्रवृत्ति का चित्रण है। विकल्प (b) धैर्य से सम्बन्धित है, जिसका भाव 'सब्र का फल मीठा होता है' जैसी लोकोक्तियों में मिलता है। विकल्प (c) सीमित साधनों में बड़ी उपलब्धि का भाव देता है, जो इस लोकोक्ति में कहीं नहीं है। विकल्प (d) अविवेकपूर्ण आरम्भ की बात करता है, जिसके लिए 'बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए' जैसी भिन्न उक्ति प्रयुक्त होती है। अतः विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

21. (b)

लेखक सहायता लेने और सहायता पर निर्भर हो जाने में स्पष्ट भेद करता है। गद्यांश में सीधे कहा गया है कि सहायता लेना अपने आप में दोष नहीं है, किन्तु सहायता पर निर्भर हो जाना निश्चय ही दोष है। विकल्प (a) ठीक वही बात है जिसका लेखक ने खण्डन किया है, इसलिए वह सर्वाधिक आकर्षक जाल है। विकल्प (c) का प्रश्न गद्यांश में उठाया ही नहीं गया; लेखक कहीं भी दूसरों की सहायता करने को दोष नहीं बताता। विकल्प (d) संकोच की बात करता है, जिसका उल्लेख पूरे गद्यांश में नहीं है। अतः विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

22. (d)

गद्यांश भाग्य को परिश्रम का अनुगामी बताता है, उसका विकल्प नहीं। लेखक लिखता है कि भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो अपने हाथों को काम में लगाते हैं, अर्थात् भाग्य स्वयं कुछ नहीं देता, वह कर्म के साथ ही चलता है। विकल्प (a) प्रतीक्षा की बात करता है, जिसे गद्यांश में पिछड़ जाने का कारण बताया गया है, न कि भाग्य पाने का। विकल्प (b) सहायता माँगने से भाग्य जोड़ देता है, जो गद्यांश में कहीं नहीं कहा गया। विकल्प (c) असफलता स्वीकार करने की बात करता है, जबकि गद्यांश में तो उन लोगों की आलोचना है जो असफलता का कारण भाग्य को बता देते हैं। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

23. (c)

गद्यांश स्वावलम्बी व्यक्ति के सबसे बड़े धन के रूप में आत्मविश्वास का नाम लेता है। उसकी विशेषता भी बताई गई है कि उसे न कोई चुरा सकता है और न कोई छीन सकता है, जिससे उसे 'धन' कहने का औचित्य सिद्ध होता है। विकल्प (a) परिश्रम गद्यांश में अवश्य प्रशंसित है, किन्तु उसे 'सबसे बड़ा धन' नहीं कहा गया। विकल्प (b) ज्ञान का उल्लेख गद्यांश में इस रूप में है ही नहीं। विकल्प (d) शिक्षा की चर्चा अन्तिम वाक्य में है, परन्तु वहाँ शिक्षा को साधन बताया गया है जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके, धन नहीं। अतः विकल्प (c) सही उत्तर होगा।

24. (a)

अन्तिम वाक्य शिक्षा के उद्देश्य को जानकारी से ऊपर उठाकर सामर्थ्य पर स्थापित करता है। लेखक कहता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी दे देना नहीं है, अपितु व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। विकल्प (b) ठीक वही बात है जिसका गद्यांश में निषेध किया गया है, क्योंकि 'केवल जानकारी दे देना' पर्याप्त नहीं माना गया। विकल्प (c) गद्यांश की मूल भावना के विपरीत है, क्योंकि लेखक भाग्य पर भरोसा करने वालों की आलोचना करता है। विकल्प (d) प्रतिष्ठा की बात करता है, जिसका उल्लेख गद्यांश में कहीं नहीं है। अतः विकल्प (a) सही उत्तर होगा।

25. (b)

यहाँ 'मुँह ताकना' मुहावरे का प्रयोग परावलम्बन के अर्थ में हुआ है। वाक्य है कि जो व्यक्ति अपने छोटे-छोटे कार्यों के लिए भी दूसरों का मुँह ताकता है, वह अपने भीतर की शक्ति खो बैठता है; यहाँ सन्दर्भ स्पष्ट रूप से दूसरों पर आश्रित रहने का है, क्योंकि पूरा गद्यांश स्वावलम्बन के विषय में है। विकल्प (a) मुहावरे का शाब्दिक अर्थ पकड़ लेता है, जो यहाँ के सन्दर्भ में लागू नहीं होता। विकल्प (c) प्रतीक्षा का भाव देता है, जो निकट तो है, किन्तु उसमें निर्भरता का वह भाव नहीं है जो यहाँ अभीष्ट है। विकल्प (d) नाराजगी का अर्थ देता है, जिसका इस मुहावरे से कोई सम्बन्ध नहीं। अतः विकल्प (b) सही उत्तर होगा।

26. (d)

The correct spelling is 'Privilege', which contains no 'd' and carries the vowel letters i, i, e, e in that order. The word comes from the Latin privilegium, formed from privus meaning private and lex meaning law, so a privilege was originally a law applying to one person alone. Option (a) inserts a 'd' that the Latin root never contained and that no modern dictionary recognises, a mistake encouraged by the sound of the final syllable. Option (b) replaces the second 'i' with an 'e'. Option (c) replaces the 'e' of the '-leg-' syllable with an 'a'. Keeping the Latin root in mind fixes the vowels reliably. Hence option (d).

27. (c)

'Ubiquitous' means present everywhere at the same time, and 'omnipresent' carries exactly that sense. It derives from the Latin ubique, meaning everywhere, and is commonly used of things so widespread that they are noticed everywhere, as in the ubiquitous mobile phone. Option (a) 'rare' is its direct opposite and is the trap for a candidate guessing from an unfamiliar-sounding word. Option (b) 'ambiguous' means open to more than one interpretation and is confused with the key word only through a loose similarity of sound. Option (d) 'unique' means being the only one of its kind, which is again close to the opposite of being found everywhere. Hence option (c).

28. (a)

A 'stoic' is one who endures pleasure and pain alike without complaint or visible emotion. The word comes from Stoicism, the Greek school of philosophy founded by Zeno, which taught that the wise person should be undisturbed by external fortune. Option (b) a 'sceptic' is one who habitually doubts accepted beliefs and demands proof, which concerns knowledge rather than emotion. Option (c) a 'cynic' is one who believes people are motivated purely by self-interest, which concerns a view of human nature. Option (d) an 'ascetic' is one who practises severe self-denial, usually for religious reasons; the ascetic deliberately avoids pleasure, whereas the stoic is simply unmoved by it, and this is the finer distinction the question tests. Hence option (a).

29. (d)

A speech made on the spur of the moment, without prior preparation, is described as 'extempore'. The word comes from the Latin ex tempore, meaning out of the time, that is, arising from the moment itself; 'impromptu' is its close synonym. Option (a) 'eloquent' describes a speech delivered fluently and persuasively, which says nothing about whether it was prepared. Option (b) 'verbose' means using more words than are needed, a criticism of style rather than of preparation. Option (c) a 'prologue' is an introductory section preceding a literary work or a play, which concerns position rather than preparation. Hence option (d).

30. (a)

'To bell the cat' means to take on a risky or dangerous task for the common good. The idiom comes from the fable in which the mice agree that a bell round the cat's neck would warn them of its approach, but none is willing to be the one to tie it on; the plan is excellent until someone must actually face the danger. Option (b) describes flattery, for which 'to butter up' would be used. Option (c) describes slipping away, for which 'to give someone the slip' or 'to make oneself scarce' is appropriate. Option (d) describes a needless warning, for which 'to cry wolf' is the standard idiom. Hence option (a).

31. (c)

The verb 'accuse' takes 'of' before the charge. The standard patterns are to accuse someone of something and to be accused of something, as in 'He was accused of negligence.' The commonest error is to confuse this with 'charge', which takes 'with', as in 'He was charged with theft'; option (a) arises from exactly this confusion. Option (b) 'for' is used after 'blame' in one of its patterns, as in 'He was blamed for the delay', but it does not follow 'accuse'. Option (d) 'against' is used with nouns such as allegation or complaint, as in 'a complaint against the clerk', not with the verb accuse. Hence option (c).

32. (b)

With 'neither ... nor' the verb agrees with the subject nearer to it, which here is the plural 'students', so 'were' is required. This is known as the principle of proximity and it applies equally to 'either ... or', 'neither ... nor' and 'not only ... but also'. Had the order been reversed, as in 'Neither the students nor the teacher was present', the singular verb would be correct, and reversing the order is the standard way such questions are made harder. Options (a) and (d) supply singular verbs that would agree with 'teacher' rather than with the nearer subject. Option (c) 'has been' is both singular and in the wrong tense for a simple statement of fact about a past occasion. Hence option (b).

33. (c)

When two actions lie in the past, the earlier one takes the past perfect and the later one the simple past. Here the train's departure happened before the arrival at the station, so 'had left' is required, while 'reached' correctly remains in the simple past. Option (a) places both actions in the simple past and so loses the sequence, leaving it unclear which happened first. Option (b) 'has left' is the present perfect, which links a past action to the present moment and therefore cannot combine with a past time marker such as 'By the time we reached'. Option (d) 'was leaving' suggests that the departure was still in progress when they arrived, which contradicts the sense of having missed the train. Hence option (c).

34. (a)

This is the second conditional, used for an imaginary or hypothetical present situation, and it requires the subjunctive 'were' for every person. The pattern is 'If + subject + were ..., subject + would + base verb', and the main clause here already has 'would accept', which confirms the structure. Option (b) 'was' is the ordinary past indicative and is widely heard in speech, but it is not accepted as correct in the subjunctive construction, particularly in the fixed expression 'If I were you'. Option (c) 'am' belongs to the first conditional, which deals with a real possibility and would require 'will' in the main clause. Option (d) 'had been' belongs to the third conditional, which concerns an unreal past and would require 'would have accepted'. Hence option (a).

35. (d)

The active sentence is in the present perfect, so the passive must be 'has been' plus the past participle. The object 'my bicycle' becomes the subject, and the indefinite agent 'someone' is dropped, since the passive is commonly preferred precisely when the doer is unknown or unimportant. Option (a) shifts the tense to the present continuous, which would describe a theft in progress. Option (b) shifts to the simple past and retains the vague agent 'by someone', which is redundant and stylistically poor in the passive. Option (c) omits 'been'

altogether, producing an active construction in which the bicycle absurdly becomes the thief. Hence option (d).

36. (a)

The passive is in the simple past, so the active must also be in the simple past, giving 'My sister wrote the letter yesterday.' In converting to the active voice, the agent introduced by 'by' becomes the subject and the subject of the passive becomes the object. Option (b) uses the present perfect, which cannot stand with the definite past time marker 'yesterday'; a sentence such as 'has written yesterday' is ungrammatical for this reason. Option (c) uses the past perfect, which would require a second and later past action for it to precede. Option (d) is not a complete sentence but a noun phrase, since 'my sister wrote yesterday' is a relative clause modifying 'the letter', leaving the head noun without a predicate of its own. Hence option (a).

37. (c)

Three changes are required at once: the pronoun, the tense and the adverb of time. The first person 'I' becomes the third person 'he' in agreement with the reporting subject; the present tense 'am' is backshifted to the past 'was' because the reporting verb 'said' is in the past; and 'at present' becomes 'then'. Option (a) fails to change the pronoun, so the sentence wrongly reports the speaker as talking about the listener. Option (b) changes the pronoun but leaves the verb and the time expression unchanged. Option (d) alters the reporting verb itself to 'says', which is not permitted, since the reporting verb given in the question must be retained. Hence option (c).

38. (b)

In converting an indirect question to direct speech, the reporting verb becomes 'said to', the interrogative word order is restored and the pronoun shifts back to the second person. The indirect form 'where I was going' refers to the listener, so in direct speech it becomes 'Where are you going?' with the auxiliary placed before the subject. Option (a) keeps the statement word order of indirect speech inside quotation marks, which is the commonest error in this item type. Option (c) retains the first person 'I', which would mean the speaker was asking about herself. Option (d) has the right pronoun but keeps the indirect word order, 'you are' instead of 'are you', which is what makes it wrong. Hence option (b).

39. (d)

Option (d) is correct because the verb 'prefer' takes 'to' and not 'than' when two things are compared. Option (a) is wrong because 'one of' must be followed by a plural noun, giving 'One of my friends is a doctor'; note that the verb stays singular, since the subject is 'one'. Option (b) is wrong because adjectives of Latin origin such as senior, junior, superior, inferior, prior and preferable take 'to' rather than 'than', giving 'He is senior to me'. Option (c) is wrong because the correct collocation is 'married to', not 'married with', giving 'She was married to a lawyer'. Hence option (d).

40. (a)

'Effect' used as a verb means to bring about or accomplish, which is exactly its sense in option (a). The pair is best remembered by its usual division of labour: 'affect' is normally the verb meaning to influence, while 'effect' is normally the noun meaning result; the exception is 'effect' as a verb meaning to bring about, which is what this question tests. Option (b) needs the noun, so it should read 'had no

effect on his condition'. Option (c) needs the verb meaning to influence, so it should read 'will affect every department'. Option (d) again needs the noun, so it should read 'a deep effect on the audience'. Hence option (a).

41. (a)

The opening sentence states the criterion directly: the difference lies entirely in how the habit was formed. The sentence that follows draws out that distinction, contrasting a habit acquired deliberately, which leaves the mind free, with one acquired by drift, which the mind is no longer free to examine. Option (b) introduces duration, which the passage mentions only in the example of the man who has risen early for twenty years, and there it illustrates automatic execution rather than the servant and master distinction. Option (c) brings in the approval of others, a consideration absent from the passage altogether. Option (d) concerns the difficulty of breaking a habit, which the closing sentence actually treats as surmountable. Hence option (a).

42. (b)

The passage states the point explicitly and the wording of the option follows it closely. Having habits is treated as a settled fact of human life, so the only open question is which ones a person ends up with; this is why the author concentrates on the manner of formation rather than on the possibility of avoidance. Option (a) raises the question of breaking habits, which the passage touches only at the end, and there it answers in the affirmative rather than treating it as the central question. Option (c) raises the question of inheritance, which the passage never considers. Option (d) concerns quantity, whereas the author's entire argument is about the kind of habit, not the number. Hence option (b).

43. (c)

The example illustrates the sentence immediately preceding it, that most actions are settled long before any decision is called for. The author's point is that the man does not decide each morning; the matter was decided once and has been executing itself ever since, which shows that the sense of being governed by decisions is largely an illusion. Option (a) treats the example as a recommendation of early rising, but the author is indifferent to which habit is chosen and uses it only as an illustration. Option (b) converts the incidental figure of twenty years into a rule about how long habits take to form, which the passage nowhere states. Option (d) asserts the very thing the example is designed to deny. Hence option (c).

44. (d)

The word stands in deliberate contrast with 'faithful servant' in the same sentence, so it must describe a relation of domination. A tyrannical master is one who rules oppressively and leaves no freedom to the subject, which matches the passage's account of a drifting habit that the mind is no longer free to examine. Option (a) 'unpredictable' misses the sense, since the passage stresses that habits operate with complete regularity. Option (b) 'inefficient' is contradicted by the text, which says a habit acquired by drift performs its work just as silently as one acquired deliberately. Option (c) 'temporary' is the opposite of what is described, since the whole difficulty of such a habit is its persistence. Hence option (d).

45. (d)

The final sentence supplies the reason: if character is largely a bundle of habits, then character can be altered, slowly and in small pieces. The encouragement lies in the fact that

the alteration is within reach of anyone willing to attend to the pieces, so character is presented as workable rather than fixed. Option (a) compares the ease of forming and breaking habits, a comparison the passage never makes. Option (b) asserts that character is fixed, which is precisely the gloomy conclusion the author is rejecting. Option (c) restates the common belief that the passage has already described as mistaken, since it holds that most actions are settled before any decision arises. Hence option (d).

46. (a)

लासवेल के पाँच तत्त्वों में से प्रत्येक संचार अनुसंधान की एक शाखा से संबंधित है। 'कौन' नियंत्रण विश्लेषण से, 'क्या कहता है' विषयवस्तु विश्लेषण से, 'किस माध्यम/मीडिया से' माध्यम विश्लेषण से, 'किससे' श्रोता विश्लेषण से तथा 'किस प्रभाव के साथ' प्रभाव विश्लेषण से संबंधित है। प्रभाव विश्लेषण संदेश द्वारा प्राप्तकर्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करता है। विकल्प (b), (c) और (d) इसी रूपरेखा की वास्तविक शाखाएँ हैं, लेकिन इनमें से प्रत्येक प्रश्न के एक अलग तत्त्व से संबंधित है। इसीलिए यह प्रश्न सामान्य परिचय के स्थान पर सटीक स्मरण की जाँच करता है। अतः विकल्प (a) सही है।

47. (b)

विल्बर श्राम ने प्रेषक और प्राप्तकर्ता के अनुभव के अतिव्यापी क्षेत्रों की अवधारणा प्रस्तुत की थी। उनके अनुसार, अर्थ का साझा होना तभी संभव है, जब दोनों मंडलियों (सर्कल) में अतिव्यापन हो; अतिव्यापन जितना अधिक होगा, संचार उतना ही सुगम होगा। विकल्प (a) में उल्लिखित लासवेल ने पाँच प्रश्नों वाला रैखिक सूत्र प्रस्तुत किया था, जिसमें ऐसी कोई अवधारणा नहीं है। विकल्प (c) में उल्लिखित बर्लो ने स्रोत, संदेश, माध्यम और प्राप्तकर्ता की रूपरेखा विकसित की थी तथा कौशल और अभिवृत्तियों जैसे कारकों के माध्यम से प्रत्येक का विश्लेषण किया था। विकल्प (d) में उल्लिखित शैनन ने वीवर के साथ मिलकर गणितीय मॉडल प्रस्तुत किया, जिसका विशिष्ट योगदान रव (नॉइज़) की अवधारणा थी। अतः विकल्प (b) सही है।

48. (c)

अधोमुखी संचार प्राधिकार के उच्च स्तर से निम्न स्तर की ओर प्रवाहित होता है तथा इसमें सामान्यतः निर्देश, नीतियाँ और निदेश शामिल होते हैं। विभागाध्यक्ष द्वारा सभी कर्मचारियों को निर्देशों से संबंधित परिपत्र जारी करना इसका सटीक उदाहरण है। विकल्प (a) ऊर्ध्वमुखी संचार है, क्योंकि शिकायत अधीनस्थ से उच्च अधिकारी तक पहुँचती है। विकल्प (b) पार्श्विक अथवा क्षैतिज संचार है, जो समान पद वाले अधिकारियों के बीच होता है। विकल्प (d) अफवाह-तंत्र के माध्यम से होने वाला अनौपचारिक संचार है, जो किसी आधिकारिक माध्यम का अनुसरण नहीं करता। अतः विकल्प (c) सही है।

49. (d)

निस्यंदन प्रेषक द्वारा संदेश में जानबूझकर की गई ऐसी छेड़छाड़ है, जिससे वह प्राप्तकर्ता के समक्ष अधिक अनुकूल दिखाई दे। यह ऊर्ध्वमुखी संचार में सबसे अधिक प्रचलित है, क्योंकि अधीनस्थ अपने उच्च अधिकारी तक अप्रिय समाचार पहुँचाने से हिचकिचाते हैं। पदानुक्रम में स्तरों की संख्या बढ़ने के साथ इसकी प्रवृत्ति भी बढ़ती है। विकल्प (a) में उल्लिखित भौतिक रव किसी बाह्य व्यवधान, जैसे ख़राब संचार लाइन, को दर्शाता है। विकल्प (b) में उल्लिखित चयनात्मक प्रत्यक्षण प्राप्तकर्ता के स्तर पर होता है, जहाँ वह केवल उन्हीं बातों पर ध्यान देता है, जो उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप होती हैं। विकल्प (c) में उल्लिखित सूचना अतिभार तब उत्पन्न होता है, जब प्राप्त होने वाली सामग्री की मात्रा उसे संसाधित करने की क्षमता से अधिक हो जाती है। अतः विकल्प (d) सही है।

50. (a)

संप्रतीक अशाब्दिक संकेत होते हैं, जिनका एक सर्वमान्य अर्थ होता है और जो स्वयं में वाक् के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं। चूँकि उनका अर्थ परंपरा द्वारा निर्धारित होता है, इसलिए वह विभिन्न संस्कृतियों में भिन्न हो सकता है। एक देश में हानिरहित माना जाने वाला हाव-भाव दूसरे देश में अपमानजनक हो सकता है। विकल्प (b) में उल्लिखित चित्रात्मक हाव-भाव वाक् के साथ प्रयुक्त होते हैं और कही जा रही बात को दर्शाते हैं, जैसे हाथों से किसी वस्तु का आकार बताना। विकल्प (c) में उल्लिखित विनियामक हाव-भाव वार्तालाप के प्रवाह को नियंत्रित करते हैं, जैसे वक्ता को बोलते रहने का इशारा देने के लिए सिर हिलाना। विकल्प (d) में उल्लिखित अनुकूलक हाव-भाव तनाव कम

करने वाली अचेतन गतिविधियाँ हैं, जैसे पैर थपथपाना। अतः विकल्प (a) सही है।

51. (b)

बारह बजे के चिह्न से प्रत्येक सुई की स्थिति निर्धारित कीजिए और उनके बीच का अंतर ज्ञात कीजिए। मिनट की सुई प्रति मिनट 6 डिग्री चलती है, इसलिए 40 मिनट पर उसकी स्थिति 240 डिग्री होती है। घंटे की सुई प्रति घंटे 30 डिग्री तथा प्रति मिनट अतिरिक्त आधा डिग्री चलती है। इसलिए 3:40 बजे उसकी स्थिति 90 + 20, अर्थात् 110 डिग्री होती है। दोनों सुइयों के बीच का कोण 240 − 110 = 130 डिग्री है। सबसे सामान्य त्रुटि घंटे की सुई को 3 के चिह्न पर ही स्थिर मान लेना है और 40 मिनट के दौरान उसके 20 डिग्री आगे बढ़ने की उपेक्षा करना है। इससे 150 डिग्री प्राप्त होता है, जो विकल्प (c) है। अतः विकल्प (b) सही है।

52. (c)

दी गई तिथि से दिनों की गणना कीजिए और प्राप्त संख्या को सात से भाग देकर शेषफल ज्ञात कीजिए। 1 जनवरी से 1 मार्च तक जनवरी के 31 दिन और फरवरी के 29 दिन होते हैं, क्योंकि 2024 एक अधिवर्ष (लीप वर्ष) है। इस प्रकार कुल 60 दिन होते हैं। 60 को 7 से भाग देने पर शेषफल 4 प्राप्त होता है। इसलिए सोमवार से चार दिन आगे बढ़ने पर शुक्रवार आता है। यहाँ निर्णायक तथ्य अधिवर्ष होना है। यदि कोई अभ्यर्थी फरवरी में 28 दिन मानता है, तो कुल 59 दिन होंगे और शेषफल 3 प्राप्त होगा, जिससे उत्तर गुरुवार आएगा। कोई वर्ष अधिवर्ष होता है, यदि वह 4 से विभाज्य हो; हालाँकि, शताब्दी वर्ष के लिए उसका 400 से विभाज्य होना आवश्यक है। अतः विकल्प (c) सही है।

53. (d)

यह **शृंखला** ऐसे अंतरों पर आधारित है, जो स्वयं एक नियमित क्रम में बढ़ते हैं। प्रत्येक पद को अगले पद से घटाने पर 3, 6, 9 और 12 प्राप्त होते हैं। ये पद 3 के सार्व अंतर वाली समांतर श्रेणी बनाते हैं। इसलिए अगला अंतर 15 होगा और इसे 32 में जोड़ने पर 47 प्राप्त होगा। जब किसी **शृंखला** में एक ही गुणा या जोड़ के नियम से समाधान नहीं मिलता, तो प्रथम अंतर और उसके बाद द्वितीय अंतर ज्ञात करना एक मानक विधि है। यहाँ द्वितीय अंतर 3 पर स्थिर है। अतः विकल्प (d) सही है।

54. (a)

प्रत्येक युग्म के दोनों अक्षर विपरीत दिशाओं में आगे बढ़ते हैं। पहले अक्षरों का क्रम A, C, E, G है, जिसमें प्रत्येक बार दो स्थान आगे बढ़ा जाता है। इसलिए अगला अक्षर I होगा। दूसरे अक्षरों का क्रम Z, X, V, T है, जिसमें प्रत्येक बार दो स्थान पीछे आया जाता है। इसलिए अगला अक्षर R होगा। अतः अपेक्षित पद IR है। विकल्प (b) में दूसरे अक्षर को केवल एक स्थान पीछे किया गया है, विकल्प (c) में पहले अक्षर को तीन स्थान आगे बढ़ाया गया है और विकल्प (d) में उसे केवल एक स्थान आगे बढ़ाया गया है। अतः विकल्प (a) सही है।

55. (b)

इस समूह की एक संख्या को छोड़कर शेष सभी पूर्ण वर्ग हैं। यहाँ 121, 11 का वर्ग है; 144, 12 का वर्ग है; 169, 13 का वर्ग है; और 196, 14 का वर्ग है। जबकि 180 किसी भी पूर्णांक का वर्ग नहीं है, क्योंकि यह 169 और 196 के बीच स्थित है। 11 से 14 तक की संख्याओं के वर्ग क्रम से दिए गए हैं तथा 180 को 169 और 196 के बीच असंगत संख्या के रूप में रखा गया है। विकल्प (a), (c) और (d) सभी पूर्ण वर्ग हैं और इसलिए इस समूह से संबंधित हैं। अतः विकल्प (b) सही है।

56. (c)

संज्ञानात्मक विसंगति लियोन फेस्टिंगर द्वारा प्रतिपादित एक अवधारणा है, जो विश्वासों के बीच अथवा विश्वास और आचरण के बीच असंगति के कारण उत्पन्न मानसिक तनाव को दर्शाती है। व्यक्ति किसी एक विश्वास को बदलकर, अपना व्यवहार बदलकर अथवा एक नया विश्वास जोड़कर इस तनाव को दूर करने का प्रयास करता है, जिससे असंगति का स्पष्टीकरण मिल सके। विकल्प (a) में उल्लिखित चयनात्मक अनावरण ऐसी जानकारी खोजने की प्रवृत्ति है, जो व्यक्ति के मौजूदा विश्वासों के अनुरूप हो। वास्तव में, यह स्वयं संज्ञानात्मक विसंगति नहीं, बल्कि उससे बचने का एक तरीका है। विकल्प (b) में उल्लिखित आरोपण त्रुटि इस बात से संबंधित है कि हम व्यवहार की व्याख्या किस प्रकार करते हैं। विकल्प (d) में उल्लिखित मानसिक समुच्चय समस्या-समाधान का एक स्थिर उपागम है, जिसे पूर्व की सफलता के आधार पर अपनाया जाता है। अतः विकल्प (c) सही है।

57. (a)

खंडीयन विधि में अलग-अलग मदों को पुनः कूटबद्ध कर कम संख्या वाली बड़ी इकाइयों में परिवर्तित किया जाता है,

जिससे सात मदों की सीमा मूल मदों के स्थान पर इन खंडों पर लागू होती है। दस अलग-अलग अंकों को याद रखने के स्थान पर तीन और चार अंकों के समूहों में टेलीफोन नंबर याद रखना इसका एक मानक उदाहरण है। विकल्प (b) में उल्लिखित पूर्वाभ्यास वह पुनरावृत्ति है, जो सामग्री को अल्पकालिक स्मृति में बनाए रखती है अथवा उसे दीर्घकालिक स्मृति में स्थानांतरित करती है, लेकिन इससे स्मृति की क्षमता नहीं बढ़ती। विकल्प (c) में उल्लिखित कूटलेखन सूचना को ऐसे रूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है, जिसे स्मृति में संगृहीत किया जा सके। विकल्प (d) में उल्लिखित प्राथमिक लेप (प्राइमिंग) किसी उद्दीपक के पूर्व अनुभव का उसके बाद होने वाले पहचान-कार्य पर पड़ने वाला प्रभाव है। अतः विकल्प (a) सही है।

58. (d)

प्रतिशत ज्ञात करने से पहले सभी चार मदों का कुल योग निकालिए। कुल बजट 120+90+60+30 = 300 करोड़ रुपये है। स्वास्थ्य मद को 90 करोड़ रुपये प्राप्त होते हैं। इसलिए कुल बजट में उसका हिस्सा $\frac{90}{300} \times 100 =$ 30% है। विकल्प (c) में शिक्षा का हिस्सा दिया गया है, जो 300 करोड़ में से 120 करोड़ है। विकल्प (a) में सड़क मद का हिस्सा दिया गया है। सबसे सामान्य त्रुटि कुल बजट के स्थान पर किसी एक अन्य मद को आधार बनाकर हिस्से की गणना करना है। इसलिए ध्यान दीजिए कि यहाँ चारों मदों के प्रतिशत क्रमशः 40%, 30%, 20% और 10% हैं, जिनका योग पूरे बजट के बराबर है। अतः विकल्प (d) सही है।

59. (c)

निर्णय को स्थगित रखना वह नियम है, जिस पर विचारावेश (ब्रेनस्टॉर्मिंग) आधारित है। विचार उत्पन्न करने के चरण के दौरान आलोचना से सदस्य सतर्क हो जाते हैं और उन असामान्य सुझावों को दबा देते हैं, जिनसे प्रायः अच्छे समाधान विकसित होते हैं। इसलिए मूल्यांकन को बाद के एक अलग चरण तक स्थगित रखा जाता है। इसके साथ निर्धारित अन्य नियम हैं कि विचारों की अधिक संख्या वांछनीय है, असामान्य विचारों का स्वागत किया जाता है तथा सदस्यों को एक-दूसरे के सुझावों को आगे विकसित करना चाहिए। विकल्प (a) उस समान सहभागिता के सिद्धांत के विपरीत है, जिसकी इस तकनीक में आवश्यकता होती है। विकल्प (b) ठीक उसी प्रक्रिया को दर्शाता है, जिसे यह नियम निषिद्ध करता है। विकल्प (d) उद्देश्य को उलट देता है, क्योंकि इसमें बड़ी संख्या में विचार उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है। अतः विकल्प (c) सही है।

60. (d)

रूढ़िबद्धता (स्टीरियोटाइपिंग) में किसी समूह की एक अनुमानित विशेषता उस समूह के प्रत्येक व्यक्ति पर लागू कर दी जाती है। यह इसलिए बनी रहती है, क्योंकि अनुकूल उदाहरणों पर ध्यान दिया जाता है, जबकि अपवादों की ऐसी व्याख्या कर दी जाती है, जिससे पूर्वधारणा बनी रहे। विकल्प (a) में उल्लिखित प्रक्षेपण अपनी भावनाओं या उद्देश्यों को किसी दूसरे व्यक्ति पर आरोपित करना है। विकल्प (b) में उल्लिखित परिवेश प्रभाव किसी एक अनुकूल विशेषता के आधार पर संपूर्ण व्यक्ति के बारे में सामान्य निष्कर्ष निकालना है। यह किसी समूह के स्थान पर एक व्यक्ति से संबंधित होता है। विकल्प (c) में उल्लिखित विपर्यास (कंट्रास्ट) प्रभाव उस विकृति को दर्शाता है, जो किसी व्यक्ति का आकलन उससे ठीक पहले देखे गए उल्लेखनीय रूप से बेहतर या ख़राब व्यक्ति की तुलना में करने से उत्पन्न होती है। अतः विकल्प (d) सही है।

61. (a)

प्रत्येक अक्षर वर्णमाला में एक स्थान आगे बढ़ता है। दिए गए शब्द की जाँच करने पर M का N, O का P, N का O, D का E, A का B तथा Y का Z हो जाता है। इस प्रकार यह नियम सभी छह अक्षरों पर लागू होता है। इसी नियम को FRIDAY पर लागू करने पर F का G, R का S, I का J, D का E, A का B तथा Y का Z हो जाता है, जिससे GSJEBZ प्राप्त होता है। विकल्प (b) में पाँचवें अक्षर को एक के स्थान पर दो स्थान आगे बढ़ाया गया है, विकल्प (c) में तीसरे अक्षर को अपरिवर्तित रखा गया है तथा विकल्प (d) में पहले अक्षर को दो स्थान आगे बढ़ाया गया है। अतः विकल्प (a) सही है।

62. (b)

प्रत्येक अक्षर को वर्णमाला में उसकी स्थिति से प्रतिस्थापित किया जाता है और इन स्थितियों को जोड़ दिया जाता है। CAT के लिए C की स्थिति 3, A की स्थिति 1 तथा T की स्थिति 20 है। इनका योग 24 होता है, जो इस नियम की पुष्टि करता है। DOG के लिए D की स्थिति 4, O की स्थिति 15 तथा G की स्थिति 7 है, जिससे कुल योग 26 प्राप्त होता है। विचलित करने वाले विकल्प सही योग से एक या दो इकाई ऊपर या नीचे रखे गए हैं, ताकि किसी अक्षर

की स्थिति याद करने में छोटी-सी त्रुटि करने वाला अभ्यर्थी त्रुटि पहचानने के स्थान पर उन विकल्पों में से किसी एक को चुन ले। अतः विकल्प (b) सही है।

63. (c)

कथन को भीतर से बाहर की ओर समझिए। 'मेरी माता की इकलौती पुत्री' वाक्यांश वक्ता की माता से जन्मी एकमात्र पुत्री की पहचान करता है। चूँकि वक्ता स्वयं एक महिला है, इसलिए वह पुत्री केवल वक्ता ही हो सकती है। इस प्रकार कथन का अर्थ है, 'उसकी माता मैं स्वयं हूँ', जिससे स्पष्ट होता है कि वह महिला उस पुरुष की माता है। विकल्प (a) के सही होने के लिए दोनों के एक ही माता-पिता होना आवश्यक होता, जिसका कथन में उल्लेख नहीं है। विकल्प (b) के लिए महिला का उसके माता-पिता में से किसी एक की बहन होना आवश्यक होता, जबकि वह स्वयं उसकी माता है। विकल्प (d) के अनुसार महिला उससे एक पीढ़ी ऊपर की होती। अतः विकल्प (c) सही है।

64. (c)

प्रेक्षणों के किसी समुच्चय का परिसर उसके अधिकतम और न्यूनतम मान के बीच का अंतर होता है। यहाँ अधिकतम मान 41 और न्यूनतम मान 12 है। इसलिए परिसर 41-12=29 है। विकल्प (d) में अधिकतम मान को ही उत्तर मान लिया गया है। विकल्प (a) में माध्यिका दी गई है, जो आँकड़ों को क्रम में व्यवस्थित 12, 17, 18, 23, 29, 35, 41 करने पर 23 प्राप्त होती है। परिसर प्रकीर्णन की सबसे सरल माप है, लेकिन इसमें केवल दो चरम मानों का उपयोग होता है और शेष प्रेक्षणों के विस्तार की उपेक्षा की जाती है। इसी कारण सामान्यतः मानक विचलन को सामान्यतः वरीयता दी जाती है। अतः विकल्प (c) सही है।

65. (a)

गति को दोनों अक्षों के अनुदिश अलग-अलग दर्ज कीजिए। उत्तर दिशा की ओर मुख करके चलने पर दाईं ओर मुड़ने से व्यक्ति पूर्व दिशा की ओर तथा दूसरी बार दाईं ओर मुड़ने से दक्षिण दिशा की ओर चलने लगता है। इस प्रकार वह पहले उत्तर दिशा में 5 किमी, फिर पूर्व दिशा में 3 किमी और अंत में दक्षिण दिशा में 5 किमी चलता है। उत्तर और दक्षिण दिशा में तय की गई दूरियाँ समान हैं और एक-दूसरे को पूर्णतः निरस्त कर देती हैं। इसलिए केवल पूर्व दिशा में तय की गई 3 किमी की दूरी शेष रहती है। विकल्प (b) में दिशा उलट दी गई है, जो दाईं ओर के स्थान पर बाईं ओर मुड़ने की त्रुटि से उत्पन्न होती है। विकल्प (c) में पहली दूरी को ही उत्तर मान लिया गया है। विकल्प (d) में उत्तर दिशा की दूरियों को निरस्त करने के स्थान पर जोड़ दिया गया है। अतः विकल्प (a) सही है।

66. (b)

अनुबंधन से पहले घंटी बजने पर लार स्रावित नहीं होती थी, इसलिए घंटी एक उदासीन उद्दीपक थी। भोजन के साथ बार-बार युग्मित किए जाने के बाद ही उसने स्वयं लार स्रावित कराने की क्षमता प्राप्त की, जिसके बाद वह अनुबंधित उद्दीपक बन गई। विकल्प (a) में उल्लिखित अननुबंधित उद्दीपक भोजन था, जो बिना किसी अधिगम के स्वाभाविक रूप से लार स्रावित कराता था। विकल्प (c) में उल्लिखित अननुबंधित अनुक्रिया भोजन के कारण होने वाला लार स्राव था। विकल्प (d) में उल्लिखित अनुबंधित अनुक्रिया वह लार स्राव था, जो बाद में केवल घंटी बजने पर होने लगा। अतः विकल्प (b) सही है।

67. (c)

सम्मान संबंधी आवश्यकताएँ मैस्लो के पाँच-स्तरीय पदानुक्रम का चौथा स्तर हैं। इनमें आत्मसम्मान तथा दूसरों द्वारा दिया जाने वाला सम्मान, अर्थात् पहचान, प्रस्थिति और प्रतिष्ठा शामिल हैं। विकल्प (a) में उल्लिखित शारीरिक आवश्यकताएँ पहला स्तर हैं, जिनमें भूख, प्यास, नींद और आश्रय शामिल हैं। विकल्प (b) में उल्लिखित सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएँ दूसरा स्तर हैं, जिनमें शरीर, रोज़गार और संपत्ति की सुरक्षा शामिल है। विकल्प (d) में उल्लिखित आत्मसिद्धि पाँचवाँ और सर्वोच्च स्तर है, जिसका अर्थ अपनी पूर्ण क्षमता को साकार करना है। सुरक्षा और सम्मान के बीच स्थित तीसरा स्तर प्रेम और अपनत्व की आवश्यकताओं का है। अतः विकल्प (c) सही है।

68. (d)

कार्यदशाएँ एक स्वच्छता कारक हैं, अर्थात् कार्य-परिवेश की ऐसी विशेषता, जिसकी अनुपस्थिति असंतोष उत्पन्न करती है, लेकिन जिसकी उपस्थिति अपने आप में अभिप्रेरणा उत्पन्न नहीं करती। अन्य स्वच्छता कारकों में वेतन, संगठन की नीतियाँ, पर्यवेक्षण और नौकरी की सुरक्षा शामिल हैं। विकल्प (a), (b) और (c) सभी अभिप्रेरक हैं। ये स्वयं कार्य की विषयवस्तु से उत्पन्न होते हैं और सकारात्मक संतुष्टि प्रदान करते हैं। अभिप्रेरकों की पूर्ण सूची में पदोन्नति तथा स्वयं कार्य भी शामिल हैं। इस सिद्धांत का केंद्रीय दावा यह है कि संतुष्टि और असंतुष्टि एक ही पैमाने

के दो विपरीत छोर नहीं हैं, बल्कि ये कारकों के दो अलग-अलग समूहों से उत्पन्न होती हैं। अतः विकल्प (d) सही है।

69. (a)

सहयोग करने में व्यक्ति स्वयं के हितों तथा दूसरे पक्ष के हितों, दोनों के प्रति उच्च स्तर की चिंता रखता है और ऐसा समाधान खोजता है, जिसमें किसी भी पक्ष को अपने हितों का त्याग न करना पड़े। विकल्प (b) में उल्लिखित समझौता करने में दोनों पक्षों के हितों के प्रति मध्यम स्तर की चिंता होती है और ऐसा समाधान प्राप्त होता है, जिसमें प्रत्येक पक्ष कुछ न कुछ त्याग करता है; इसलिए कोई भी पक्ष पूर्णतः संतुष्ट नहीं होता। विकल्प (c) में उल्लिखित समंजक में स्वयं के हितों के प्रति चिंता कम तथा दूसरे पक्ष के हितों के प्रति चिंता अधिक होती है, इसलिए एक पक्ष दूसरे के समक्ष झुक जाता है। विकल्प (d) में उल्लिखित टालने में दोनों पक्षों के हितों के प्रति चिंता कम होती है और समस्या का समाधान किए बिना उससे बचा जाता है। पाँचवीं शैली प्रतिस्पर्धा है, जिसमें स्वयं के हितों के प्रति चिंता अधिक तथा दूसरे पक्ष के हितों के प्रति चिंता कम होती है। अतः विकल्प (a) सही है।

70. (b)

अहस्तक्षेपवादी अथवा मुक्त-रोध नेतृत्व शैली में निर्णय लेने का अधिकार समूह को सौंप दिया जाता है और नेता का हस्तक्षेप न्यूनतम रखा जाता है। यह शैली परिपक्व एवं अत्यधिक कुशल दल के साथ प्रभावी हो सकती है, लेकिन जब समूह में दिशा या अनुभव का अभाव होता है, तो इससे दिशाहीनता उत्पन्न हो सकती है। विकल्प (a) में उल्लिखित निरंकुश नेता स्वयं निर्णय लेता है और चर्चा के बिना उनके अनुपालन की अपेक्षा करता है। विकल्प (c) में उल्लिखित लोकतांत्रिक अथवा सहभागी नेता समूह से परामर्श करता है और उसके साथ मिलकर निर्णय लेता है। यह पूर्णतः हस्तक्षेप से हट जाने की शैली से भिन्न है। विकल्प (d) में उल्लिखित नौकरशाही में नेता नियमों और प्रक्रियाओं का कठोरता से पालन करता है। निरंकुश, लोकतांत्रिक और अहस्तक्षेपवादी नेतृत्व का त्रि-स्तरीय वर्गीकरण कर्ट लेविन से संबंधित है। अतः विकल्प (b) सही है।

71. (c)

चार में से तीन शुद्ध धातुएँ हैं और एक मिश्रातु है। ताँबा, जस्ता और लोहा रासायनिक तत्त्व हैं तथा आवर्त सारणी में प्रत्येक का अपना स्थान है, जबकि पीतल कोई तत्त्व नहीं, बल्कि ताँबे और जस्ते का मिश्रण है। इस प्रश्न में भ्रम की संभावना इसलिए बढ़ जाती है, क्योंकि पीतल के दोनों घटक भी विकल्पों में उपस्थित हैं। इससे अभ्यर्थी विषम सदस्य की पहचान करने के स्थान पर उनके बीच संबंध खोजने का प्रयास कर सकता है। अतः विकल्प (c) सही है।

72. (d)

यहाँ संबंध अध्ययन की एक शाखा और उसके द्वारा अध्ययन किए जाने वाले जीव के बीच है। ऑर्निथोलॉजी पक्षियों का अध्ययन है और उसी प्रकार एंटोमोलॉजी कीटों का अध्ययन है। शेष विकल्प अलग-अलग अध्ययन शाखाओं से संबंधित हैं: सरीसृपों का अध्ययन हर्पेटोलॉजी कहलाता है, जिसमें उभयचर भी शामिल होते हैं; मछलियों का अध्ययन इक्थियोलॉजी कहलाता है; तथा पौधों का अध्ययन बॉटनी (वनस्पति विज्ञान) कहलाता है। एंटोमोलॉजी और एटिमोलॉजी के उच्चारण में समानता भी इस प्रकार के प्रश्नों में त्रुटि का एक अतिरिक्त कारण है। एटिमोलॉजी शब्दों की उत्पत्ति का अध्ययन है। अतः विकल्प (d) सही है।

73. (a)

नियम संख्या का वर्ग करके उसमें 1 जोड़ना है। दिए गए युग्म की जाँच करने पर 7 का वर्ग 49 होता है और उसमें 1 जोड़ने पर 50 प्राप्त होता है, जिससे संबंध की पुष्टि होती है। इसी नियम को 9 पर लागू करने पर उसका वर्ग 81 होगा और उसमें 1 जोड़ने पर 82 प्राप्त होगा। विकल्प (b) में संख्या का वर्ग करके उसमें से 1 घटाया गया है, विकल्प (c) में 10 से गुणा किया गया है तथा विकल्प (d) में 8 से गुणा किया गया है। इनमें से कोई भी नियम 7 और 50 के बीच दिए गए संबंध को पुनः उत्पन्न नहीं करता। अतः विकल्प (a) सही है।

74. (b)

नियम के अनुसार, एक छोर से स्थान और दूसरे छोर से स्थान का योग कुल व्यक्तियों की संख्या से 1 अधिक होता है। यहाँ कुल विद्यार्थी 40 हैं और बाएँ छोर से रवि का स्थान 12वाँ है। इसलिए दाएँ छोर से उसका स्थान $40 - 12 + 1 = 29$वाँ होगा। अतिरिक्त 1 इसलिए जोड़ा जाता है, क्योंकि रवि की गणना दोनों छोरों से की जाती है। अन्यथा उसकी गणना एक बार छूट जाएगी। विकल्प (a) में इस सुधार को छोड़ दिया गया है, जो इस प्रश्न में एक सामान्य भ्रम है। विकल्प (c) और (d) में गणना करते समय क्रमशः एक स्थान कम या अधिक की त्रुटि की गई है। अतः विकल्प (b) सही है।

75. (c)

प्रश्न यह पूछता है कि किसी अवधारणा के लिए क्या अनिवार्य है, न कि उसके साथ सामान्यतः क्या पाया जाता है। विश्वविद्यालय की स्थापना शिक्षण के लिए होती है और शिक्षण के लिए शिक्षार्थियों का होना आवश्यक है। इसलिए विद्यार्थी विश्वविद्यालय की अवधारणा के अभिन्न अंग हैं। विद्यार्थियों के बिना किसी संस्थान को विश्वविद्यालय नहीं कहा जा सकता। छात्रावास, खेल का मैदान और जलपानगृह व्यवहार में सामान्यतः विश्वविद्यालयों में पाए जाते हैं तथा प्रायः अपेक्षित भी होते हैं, लेकिन इनमें से प्रत्येक के अभाव में भी संस्थान विश्वविद्यालय बना रह सकता है। इसलिए ये अनिवार्य के स्थान पर आनुषंगिक हैं। अतः विकल्प (c) सही है।

76. (b)

पहले दोनों चालें ज्ञात कीजिए और फिर मानक संबंध का उपयोग कीजिए। धारा की दिशा में नाव की चाल 30÷2=15 किमी/घंटा है तथा धारा की विपरीत दिशा में नाव की चाल 30÷3=10 किमी/घंटा है। धारा की चाल इन दोनों चालों के अंतर की आधी होती है। इसलिए धारा की चाल (15-10)÷2=2.5 किमी/घंटा है। शांत जल में नाव की चाल दोनों चालों के योग की आधी, अर्थात् (15+10)÷2=12.5 किमी/घंटा होगी। विकल्प (d) में पूरे अंतर को लेने की त्रुटि की गई है, जबकि उसका आधा लेना चाहिए। अतः विकल्प (b) सही है।

77. (c)

साधारण ब्याज मूलधन, ब्याज दर और समय के गुणनफल को 100 से विभाजित करने पर प्राप्त होता है। यहाँ साधारण ब्याज 6,000 × 7.5 × 4 को 100 से भाग देने पर प्राप्त होगा जो कि 1,800 रुपये प्राप्त होता है। इसकी एक सरल विधि यह है कि 6,000 रुपये का 7.5% प्रति वर्ष 450 रुपये होता है और चार वर्षों के लिए 450 × 4 = 1,800 रुपये प्राप्त होते हैं। ध्यान दीजिए कि साधारण ब्याज में प्रत्येक वर्ष के ब्याज की केवल मूलधन पर ही गणना की जाती है, इसलिए प्रत्येक वर्ष ब्याज की राशि समान रहती है। इसके विपरीत, चक्रवृद्धि ब्याज में राशि अधिक होगी, क्योंकि प्रत्येक वर्ष का ब्याज भी आगे ब्याज अर्जित करने लगता है। अतः विकल्प (c) सही है।

78. (d)

दूध की मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होता, इसलिए गणना दूध की मात्रा से प्रारंभ कीजिए। 60 लीटर के मिश्रण में दूध और पानी का अनुपात 7 : 3 है। इसलिए दूध की मात्रा 60 × 7/10=42 लीटर तथा पानी की मात्रा 60 × 3/10=18 लीटर है। मान लीजिए कि मिलाए जाने वाले पानी की मात्रा x लीटर है। नया अनुपात 3 : 2 होने के लिए,

42/(18+x)=3/2

वज्र-गुणन करने पर 84=54+3x प्राप्त होता है। इससे 3x=30 और x=10 प्राप्त होता है। जाँच करने पर मिश्रण में 42 लीटर दूध और 28 लीटर पानी होगा, जिनका अनुपात वास्तव में 3 : 2 है। अतः विकल्प (d) सही है।

79. (a)

औसत से कुल योग ज्ञात कीजिए, फिर परिवर्तन की गणना करके पुनः औसत निकालिए। पाँच संख्याओं का औसत 27 है, इसलिए उनका कुल योग 5 × 27=135 होगा। 35 के स्थान पर 15 रखने से कुल योग में 20 की कमी आती है। इसलिए नया कुल योग 115 होगा। पाँच से विभाजित करने पर नया औसत 23 प्राप्त होता है। एक सरल विधि यह है कि कुल योग में 20 की कमी होने से औसत में 20÷5=4 की कमी होगी। इसलिए नया औसत 27-4=23 है। विकल्प (c) में 4 के स्थान पर 2 घटाया गया है, जो गलत संख्या से विभाजन करने के कारण होता है। अतः विकल्प (a) सही है।

80. (b)

मान लीजिए कि पुत्र की वर्तमान आयु x वर्ष है, तो पिता की वर्तमान आयु 3x वर्ष होगी। 8 वर्ष बाद उनकी आयु क्रमशः x+8 और 3x+8 होगी।

प्रश्नानुसार, 3x+8=2(x+8)

सरलीकरण करने पर 3x+8=2x+16 प्राप्त होता है, जिससे x=8 प्राप्त होता है। इसलिए पुत्र की आयु 8 वर्ष और पिता की आयु 24 वर्ष है। जाँच करने पर 8 वर्ष बाद पुत्र की आयु 16 वर्ष तथा पिता की आयु 32 वर्ष होगी, जो ठीक दुगुनी है। ध्यान दीजिए कि उनकी आयु का अंतर 16 वर्ष रहता है और समय के साथ इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। ऐसे प्रश्नों को हल करने में यह स्थिरता प्रायः सबसे सरल तरीका प्रदान करती है। अतः विकल्प (b) सही है।

81. (a)

प्रतिशत वृद्धि की गणना सदैव मूल मान के आधार पर की जाती है, न कि नए मान के आधार पर। जनसंख्या में वृद्धि 28,000 − 25,000 = 3,000 है। इसे मूल जनसंख्या 25,000 के प्रतिशत के रूप में व्यक्त करने पर

(3,000÷25,000) × 100=12% प्राप्त होता है। मानक त्रुटि यह है कि वृद्धि को नए मान 28,000 से विभाजित कर दिया जाता है, जिससे लगभग 10.7% प्राप्त होता है और अभ्यर्थी विकल्प (b) की ओर आकर्षित हो सकता है। विकल्प (c) और (d) किसी भी गणना के आधार पर दिए गए आँकड़ों से प्राप्त नहीं होते। अतः विकल्प (a) सही है।

82. (b)

क्रमिक छूट एक के बाद एक लागू होती हैं, इसलिए उन्हें सीधे जोड़ा नहीं जा सकता। अंकित मूल्य 100 मानने पर पहली छूट के बाद मूल्य 80 रह जाता है। इस 80 पर 10% की दूसरी छूट देने के बाद मूल्य 72 रह जाता है। इसलिए कुल कमी 28 है, जो 28% की एकल समतुल्य छूट के बराबर है। यही परिणाम दो क्रमिक छूटों के सूत्र से भी प्राप्त होता है, जिसमें दोनों छूटों के योग में से उनके गुणनफल को 100 से विभाजित कर घटाया जाता है। इस प्रकार 20 + 10 − 2 = 28% प्राप्त होता है। विकल्प (c) दोनों छूट दरों को सीधे जोड़ने की त्रुटि को दर्शाता है। अतः विकल्प (b) सही है।

83. (c)

जब दोनों साझेदारों की निवेश अवधि समान होती है, तो लाभ का वितरण उनकी पूँजी के अनुपात में किया जाता है। यहाँ पूँजी 12,000 रुपये और 18,000 रुपये है, जिन्हें सरल करने पर अनुपात 2 : 3 प्राप्त होता है। इसलिए लाभ को पाँच समान भागों में बाँटा जाएगा। B को इन पाँच भागों में से तीन भाग प्राप्त होंगे, अर्थात् 7,500 रुपये का 3/5वाँ भाग, जो 4,500 रुपये है। विकल्प (a) में B के स्थान पर A का हिस्सा दिया गया है, जबकि विकल्प (b) में पूँजी के अंतर की उपेक्षा कर लाभ को समान रूप से बाँट दिया गया है। अतः विकल्प (c) सही है।

84. (d)

दिनों को एक दिन में किए जाने वाले कार्य में परिवर्तित कीजिए, दोनों की कार्य-दरों को जोड़िए और फिर उसका व्युत्क्रम लीजिए। A एक दिन में कार्य का 1/12 वाँ भाग करता है और B एक दिन में 1/18 वाँ भाग करता है। इसलिए दोनों मिलकर एक दिन में 1/12+1/18 कार्य करेंगे। 36 को समान हर लेने पर यह 3/36+2/36=5/36 कार्य प्रतिदिन होता है। इसलिए पूरा कार्य करने में 36÷5=7.2 दिन लगेंगे। विकल्प (c) में 12 और 18 का साधारण औसत लेकर उसे आधा करने की त्रुटि की गई है, जो कार्य-संबंधी प्रश्नों में लागू नहीं होती। अतः विकल्प (d) सही है।

85. (a)

पाइप से संबंधित प्रश्नों में भी कार्य-संबंधी प्रश्नों वाली समान विधि अपनाई जाती है। पहला पाइप एक मिनट में टंकी का 1/20 वाँ भाग भरता है और दूसरा पाइप 1/30 वाँ भाग भरता है। इसलिए दोनों मिलकर एक मिनट में 1/20+1/30 वाँ भाग भरेंगे। 60 को समान हर लेने पर 3/60+2/60=5/60=1/12 प्राप्त होता है। अर्थात् दोनों पाइप मिलकर एक मिनट में टंकी का 1/12वाँ भाग भरते हैं। इसलिए टंकी 12 मिनट में भर जाएगी। विकल्प (d) में 20 और 30 का समांतर माध्य 25 लिया गया है, जिसका संयुक्त दर से कोई संबंध नहीं है। विकल्प (c) में धीमे पाइप के समय का आधा, अर्थात् 15 मिनट लिया गया है। ध्यान दीजिए कि यदि कोई पाइप टंकी भरने के स्थान पर उसे खाली करता है, तो उसकी दर को जोड़ने के स्थान पर घटाया जाता है। अतः विकल्प (a) सही है।

86. (a)

पूर्वधारणा वह बात है, जिसे किसी कथन को सार्थक बनाने के लिए वक्ता द्वारा पहले से सत्य मानकर चलना आवश्यक होता है। विद्यालय अतिरिक्त कक्षाएँ तब तक प्रारंभ नहीं करेगा, जब तक उसे यह विश्वास न हो कि कम-से-कम कुछ विद्यार्थियों को नियमित विद्यालय समय के बाद अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है। इसलिए पूर्वधारणा 1 अंतर्निहित है। पूर्वधारणा 2 निर्णय की अपेक्षा से कहीं अधिक व्यापक है, क्योंकि विद्यालय इन कक्षाओं को इस अपेक्षा के साथ प्रारंभ कर सकता है कि कक्षा के केवल कुछ विद्यार्थी ही उनमें भाग लेंगे। सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति एक अपेक्षित परिणाम हो सकती है, लेकिन यह आवश्यक पूर्वशर्त नहीं है। 'प्रत्येक', 'सभी' और 'केवल' जैसे शब्द प्रायः किसी पूर्वधारणा को इतना व्यापक बना देते हैं कि उसे अंतर्निहित नहीं माना जा सकता। अतः विकल्प (a) सही है।

87. (b)

कोई कार्रवाई की दिशा तभी उचित होती है, जब वह किसी बड़ी समस्या को उत्पन्न किए बिना मूल समस्या का समाधान करे। यातायात संकेतक और गतिरोधक यातायात के प्रवाह को विनियमित करते हैं तथा दुर्घटना-संभावित स्थान पर वाहनों की गति कम करते हैं। इस प्रकार वे दुर्घटनाओं के कारण को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करते हैं और उनकी लागत भी समस्या के आनुपातिक होती है।

इसलिए कार्रवाई की दिशा अनुसरित होती है। कार्यवाही की दिशा 1 भी दुर्घटनाओं को रोक सकती है, लेकिन केवल सड़क को ही समाप्त कर। शहर के किसी चौराहे को स्थायी रूप से बंद करने से बड़ी संख्या में लोगों की आवाजाही बाधित होगी, जबकि कम कठोर उपायों से समस्या का समाधान किया जा सकता है। समस्या की तुलना में अत्यधिक असंगत उपाय को तार्किक रूप से अनुसरण करने वाला नहीं माना जाता। अतः विकल्प (b) सही है।

88. (b)

घटनाओं का कालक्रम उनके बीच कारण और प्रभाव की दिशा निर्धारित करता है। अत्यधिक भारी वर्षा की चेतावनी कल जारी की गई थी, जबकि अवकाश आज घोषित किया गया। इसलिए चेतावनी पहले आई और बाद की घटना कारण नहीं हो सकती। अत्यधिक भारी वर्षा की चेतावनी ऐसी सूचना है, जिसके आधार पर प्रशासन बच्चों की सुरक्षा के लिए विद्यालय बंद रखने का निर्णय ले सकता है। इस प्रकार घटनाओं का क्रम और उनके बीच संबंध, दोनों स्पष्ट होते हैं। विकल्प (a) में कारण और प्रभाव को उलट दिया गया है, जो इस प्रश्न का प्रमुख भ्रमकारी बिंदु है। विकल्प (c) के लिए दोनों घटनाओं का स्वतंत्र रूप से उत्पन्न होना आवश्यक होता, जबकि विकल्प (d) के लिए किसी तीसरी घटना का दोनों के पीछे कारण होना आवश्यक होता। इनमें से कोई भी स्थिति यहाँ उपयुक्त नहीं है, क्योंकि एक घटना स्पष्ट रूप से दूसरी घटना की ओर ले जाती है। अतः विकल्प (b) सही है।

89. (c)

पहले निश्चित स्थान वाले व्यक्ति को बैठाइए और फिर शेष दोनों शर्तों की एक साथ जाँच कीजिए। C बाएँ छोर के पहले स्थान पर बैठा है। चूँकि D, A और E के ठीक बीच में बैठा है, इसलिए इन तीनों को लगातार तीन स्थानों पर E, D, A अथवा A, D, E के क्रम में बैठना होगा। यदि A को पंक्ति में आरंभिक स्थान पर बैठाया जाए, तो B उसके ठीक दाईं ओर बैठेगा और इन तीनों का क्रम टूट जाएगा, फ़िर इसे किसी अन्य व्यवस्थापन से ठीक नहीं किया जा सकता। सभी शर्तों को पूरा करने वाली एकमात्र व्यवस्था C, E, D, A, B है। इसमें B, A के ठीक दाईं ओर बैठा है तथा D, E और A के बीच में है। इसलिए सबसे दाएँ छोर पर B बैठा है। अतः विकल्प (c) सही है।

90. (d)

चरणों का क्रम उस वास्तविक भौतिक प्रक्रिया के अनुसार होना चाहिए, जिसमें कार्य पूरा किया जाता है। खाली जमा पर्ची प्राप्त किए बिना कुछ भी भरा नहीं जा सकता, इसलिए चरण 4 सबसे पहले आएगा और उसके बाद चरण 2 आएगा। पर्ची भरने के बाद ही उसे नक़द राशि के साथ काउंटर पर जमा किया जा सकता है, जो चरण 3 है। अंत में जमा राशि के प्रमाण के रूप में मुहर लगा प्रतिपर्ण वापस प्राप्त किया जाता है, जो चरण 1 है। इसलिए सही क्रम 4, 2, 3, 1 है। विकल्प (a) और (c) में पर्ची प्राप्त करने से पहले ही उसे भरना शुरू कर दिया जाता है, जबकि विकल्प (b) में खाली पर्ची को भरे बिना ही जमा करने के लिए सौंप दिया जाता है। अतः विकल्प (d) सही है।

91. (c)

दो संख्याओं का गुणनफल उनके महत्तम समापवर्तक (म.स.प.) और लघुत्तम समापवर्त्य (ल.स.प.) के गुणनफल के बराबर होता है। यहाँ म.स.प. और ल.स.प. का गुणनफल $12 \times 180 = 2,160$ है। इसे ज्ञात संख्या 36 से विभाजित करने पर दूसरी संख्या 60 प्राप्त होती है। इसकी सीधे जाँच भी की जा सकती है: 36 और 60 का म.स.प. वास्तव में 12 तथा ल.स.प. 180 है। ध्यान दीजिए कि यह संबंध केवल दो संख्याओं के लिए लागू होता है और इसे तीन संख्याओं तक विस्तारित नहीं किया जा सकता। विकल्प (a) 45 और (b) 54, 12 के गुणज नहीं हैं, इसलिए 36 के साथ उनका म.स.प. 12 नहीं हो सकता। जबकि विकल्प (d) 72 लेने पर 36 और 72 का ल.स.प. 72 होगा, न कि 180। अतः विकल्प (c) सही है।

92. (d)

किसी संख्या के वर्ग से प्राप्त शेषफल केवल मूल संख्या के शेषफल पर निर्भर करता है। संख्या को $7k+4$ के रूप में लिखा जा सकता है। इसका वर्ग करने पर $49k^2+56k+16$ प्राप्त होता है। पहले दो पद 7 से पूर्णतः विभाज्य हैं, इसलिए शेषफल पूरी तरह 16 से निर्धारित होगा। 16 को 7 से विभाजित करने पर शेषफल 2 प्राप्त होता है। इसे इस रूप की किसी विशिष्ट संख्या से भी समझा जा सकता है, जैसे 11। इसका वर्ग 121 है और 121 को 7 से विभाजित करने पर शेषफल 2 प्राप्त होता है। विकल्प (c) में मूल संख्या के शेषफल 4 को सीधे उत्तर मान कर फँसाने का प्रयास किया गया है। अतः विकल्प (d) सही है।

93. (a)

वृत्त का क्षेत्रफल निकालने के लिए क्षेत्रफल = पाई (π) × त्रिज्या2 सूत्र का प्रयोग कीजिए। मान रखने पर प्राप्त होता है:

$22/7 \times r2=154$

इसलिए,

$r2 = 154 \times 7/22 = 49$

अतः त्रिज्या 7 सेंटीमीटर है। प्रश्न में संख्याएँ इस प्रकार चुनी गई हैं कि पाई (π) के हर में स्थित 7 आसानी से कट जाता है, जो सामान्यतः यह संकेत देता है कि 22/7 का उपयोग अपेक्षित है। विकल्प (b) में त्रिज्या के स्थान पर व्यास दिया गया है, जो इस प्रकार के प्रश्नों में सबसे सामान्य त्रुटि है। अतः विकल्प (a) सही है।

94. (b)

अनुकूल परिणामों की संख्या की तुलना कुल परिणामों की संख्या से कीजिए। थैले में कुल 5+4+3=12 गेंदें हैं, जिनमें से 3 नीली हैं और शेष 9 नीली नहीं हैं। इसलिए नीली न होने वाली गेंद निकालने की प्रायिकता 9/12 अर्थात् तीन-चौथाई है। यही उत्तर पूरक नियम से भी प्राप्त होता है: नीली गेंद निकालने की प्रायिकता 3/12 अर्थात् एक-चौथाई है। इसे 1 में से घटाने पर तीन-चौथाई प्राप्त होता है। विकल्प (a) नीली गेंद निकालने की प्रायिकता दर्शाता है। अतः विकल्प (b) सही है।

95. (d)

जब दो वस्तुएँ विपरीत दिशाओं में गति करती हैं, तो उनकी आपेक्षिक चाल ज्ञात करने के लिए उनकी चालों को जोड़ा जाता है। आपेक्षिक चाल 54+36=90 किमी/घंटा है। इसे मीटर/सेकंड में बदलने के लिए 5/18 से गुणा करने पर 25 मीटर/सेकंड प्राप्त होता है। एक-दूसरे को पूरी तरह पार करने के लिए दोनों रेलगाड़ियों को अपनी लंबाइयों के योग के बराबर दूरी तय करनी होगी। यह दूरी 120+180=300 मीटर है। इसलिए एक-दूसरे को पार करने में लगा समय 300/25=12 सेकंड होगा। यदि दोनों रेलगाड़ियाँ एक ही दिशा में चल रही होतीं, तो आपेक्षिक चाल ज्ञात करने के लिए उनकी चालों को घटाया जाता, जिससे अधिक समय लगता। अतः विकल्प (d) सही है।

96. (a)

प्रत्येक वर्ष की प्रतिशत वृद्धि की गणना उससे ठीक पहले वाले वर्ष के उत्पादन के आधार पर अलग-अलग की जानी चाहिए। वर्ष 2021 में वृद्धि 200 पर 40 की है, जो 20% है। वर्ष 2022 में वृद्धि 240 पर 60 की है, जो 25% है। वर्ष 2023 में वृद्धि 300 पर 30 की है, जो 10% है। वर्ष 2024 में वृद्धि 330 पर 66 की है, जो पुनः 20% है। इसलिए सर्वाधिक प्रतिशत वृद्धि वर्ष 2022 में हुई। ध्यान दीजिए कि वर्ष 2024 में निरपेक्ष मात्रा के आधार पर सर्वाधिक वृद्धि 66 टन हुई, लेकिन प्रतिशत वृद्धि सर्वाधिक नहीं थी, क्योंकि इसकी गणना बहुत बड़े आधार पर की गई है। विकल्प (d) उस अभ्यर्थी को फँसाने का का प्रयास है, जो प्रतिशत दरों के स्थान पर केवल अंतरों की तुलना करता है। अतः विकल्प (a) सही है।

97. (b)

प्रश्न में दिए गए क्रम के अनुसार दोनों संख्याओं को लेकर अनुपात को उसके सरलतम रूप में बदलिए। विज्ञान में 240 विद्यार्थी और वाणिज्य में 150 विद्यार्थी हैं। इसलिए अपेक्षित अनुपात 240 : 150 है। दोनों संख्याओं को उनके महत्तम समापवर्तक 30 से विभाजित करने पर 8 : 5 प्राप्त होता है। विकल्प (a) में यही अनुपात उलटे क्रम में लिखा गया है। यह उस अभ्यर्थी के लिए भ्रमकारी विकल्प है, जो प्रश्न में पूछे गए क्रम के स्थान पर सारणी में दिए गए क्रम के अनुसार संख्याएँ लेता है। अनुपात संबंधी प्रश्न में प्रश्न द्वारा निर्धारित क्रम ही मान्य होता है। अतः विकल्प (b) सही है।

98. (b)

पाँचों संख्याओं को जोड़कर योग को 5 से विभाजित कीजिए। कुल योग 4,200 + 3,800 + 4,500 + 4,100 + 3,900=20,500 है। इसे 5 से विभाजित करने पर औसत 4,100 प्राप्त होता है। एक सरल विधि में 4,000 को कल्पित औसत मानकर विचलनों को जोड़ा जा सकता है। विचलन क्रमशः +200, −200, +500, +100 और −100 हैं। इनका योग +500 है। इसे 5 से विभाजित करने पर +100 प्राप्त होता है, जिसे 4,000 में जोड़ने पर पुनः 4,100 प्राप्त होता है। जब संख्याएँ बड़ी हों, तब कल्पित माध्य से विचलन की यह विधि काफ़ी समय बचाती है। अतः विकल्प (b) सही है।

99. (d)

संबंधों की श्रृंखला को एक-एक कड़ी के आधार पर स्थापित कीजिए। C, B की माता है और A, B की बहन है, इसलिए C, A की भी माता है। D, C का पिता है, इसलिए D, A की माता से एक पीढ़ी ऊपर है और इस प्रकार A का नाना है। A को बहन के रूप में वर्णित किया गया है, इसलिए A महिला है। अतः वह D की नातिन है। विकल्प

(a) के अनुसार वह D की पुत्री होगी, न कि C की पुत्री। विकल्प (b) के लिए D का उसके माता-पिता में से किसी एक का भाई होना आवश्यक होगा। विकल्प (c) उसे D की ही पीढ़ी में रखता है। अतः विकल्प (d) सही है।

100. (b)

हर्बर्ट साइमन ने सीमित तर्कसंगत और संतोषजनक (Satisficing) निर्णयों की अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं। उनका तर्क था कि वास्तविक निर्णयकर्ता प्रत्येक विकल्प की जाँच नहीं कर सकते और इसलिए ऐसे पहले विकल्प पर रुक जाते हैं, जो स्वीकार्य मानक को पूरा करता है। Satisficing शब्द स्वयं Satisfy (संतुष्ट) और Suffice (पर्याप्त) शब्दों के संयोजन से बना है। विकल्प (a) में उल्लिखित मास्लो आवश्यकताओं के पदानुक्रम से संबंधित हैं। विकल्प (c) में उल्लिखित लेविन क्षेत्र सिद्धांत, समूह गतिकी और नेतृत्व की तीन शैलियों से संबंधित हैं। विकल्प (d) में उल्लिखित मैकग्रेगर ने सिद्धांत X और सिद्धांत Y प्रतिपादित किए, जो कर्मचारियों के संबंध में प्रबंधकों की दो परस्पर विरोधी मान्यताओं को दर्शाते हैं। अतः विकल्प (b) सही है।

■■■■

NEXT IAS हिन्दी